पावन जीवन चरित्र

श्रीश्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज जी का जीवन चरित्र

SGD

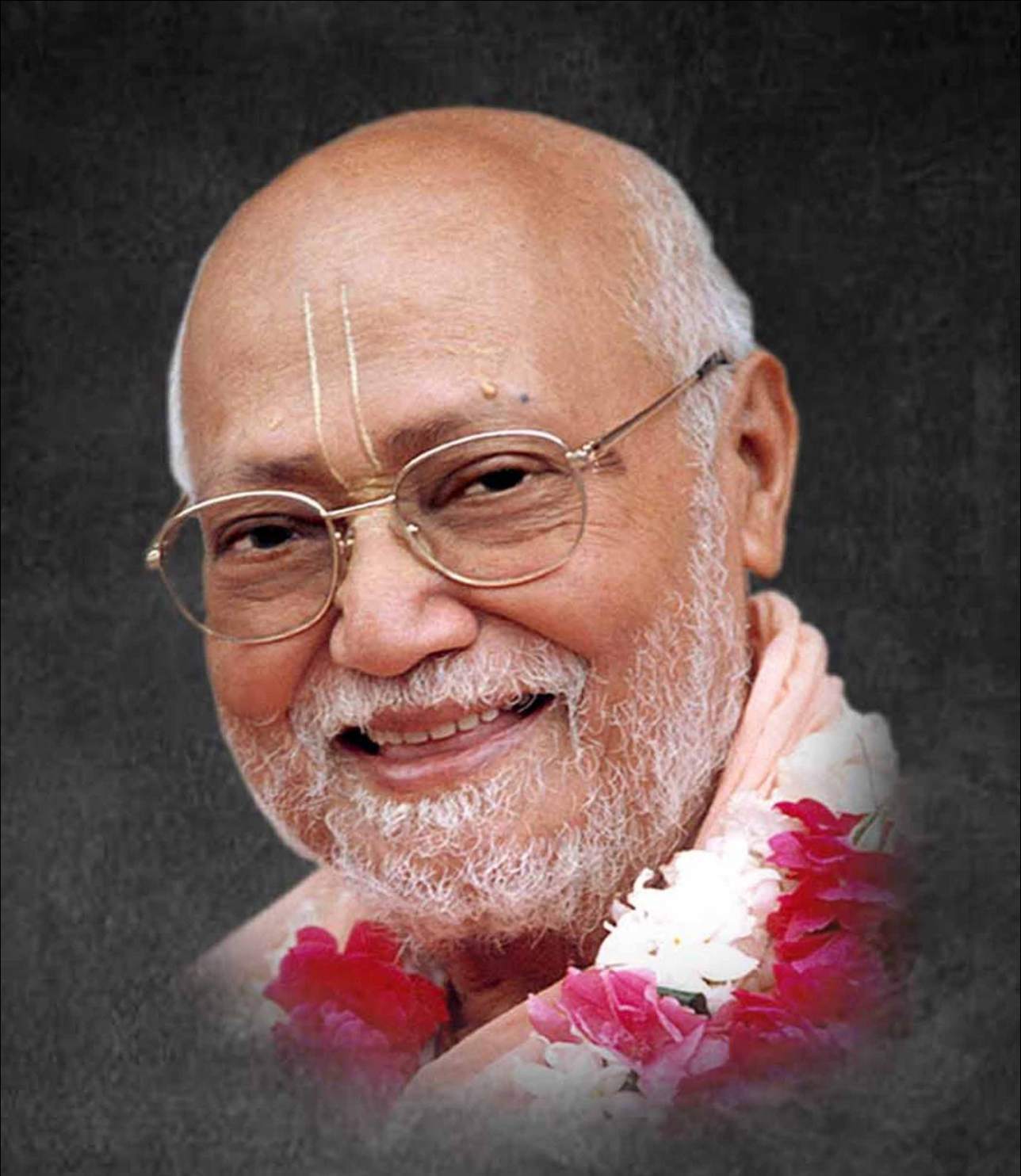

निखिल भारत श्रीचैतन्य गौड़ीय मठ
प्रतिष्ठान के प्रतिष्ठाता,
नित्यलीला प्रविष्ट ॐ 108
श्री श्रीमद् भक्ति दयित माधव गोस्वामी
महाराज विष्णुपाद जी के
प्रियतम शिष्य, त्रिदण्डिस्वामी
श्रीमद् भक्तिबल्लभ तीर्थ गोस्वामी महाराज
जी द्वारा सम्पादित

SGD

तृतीय खण्ड

भाग – 12

उड़ीसा के कोरापुट जिले में सपार्षद श्रील गुरुदेव

श्रीलगुरुदेव

“नैतिक पुनरुत्थान समिति” के द्वारा उड़ीसा के कोरापुट ज़िले के अन्तर्गत रयागड़ शहर में 9 मार्च बुधवार से 11 मार्च शुक्रवार तक स्थानीय रेल मैदान स्थित विशाल सभामण्डप में तीन दिन का एक धर्मसम्मेलन आयोजित हुआ। उड़ीसा हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश, श्री रंगनाथ मिश्र महोदय के सादर आमन्त्रण से श्रील

गुरुदेव जी ने पार्षदों सहित उक्त महद् अनुष्ठान में योगदान दिया था। माननीय श्री रंगनाथ मिश्र महोदय जी ने श्रील गुरुदेव और उनके पार्षद वृन्दत्रिदण्डियति और ब्रह्मचारियों के रहने की सुव्यवस्था की थी। उड़ीसा के स्थानीय विशिष्ट उद्योगपति डाक्टर वी० डी० पण्डा जी के द्वारा संस्थापित शूगर मिल के अतिथि भवन में श्रील गुरुदेव जी ने इस धर्म-सम्मेलन में सभापति के अभिभाषण में कहा था- 'जहाँ पर एक से अधिक व्यक्ति रहते हैं, वहीं नीति की आवश्यकता है अन्यथा

सबका एक साथ शान्ति से रह पाना सम्भव नहीं है। देशभेद से व जातिभेद से नीति अलगअलग होने पर भी नीति का मूल आधार वास्तविकता में ईश्वर-विश्वास में टिका है। इसी ईश्वर विश्वासरूप मूल नीति से गिरने पर, मनुष्यसमाज में सभी ओर विश्रृंखलता देखी जा रही है। 'नैतिक पुनरुत्थान समिति' इसी ईश्वर विश्वास को पुनः संस्थापन करने की चेष्टा में लगी हुई है, जो कि अति प्रशंसनीय कार्य है। कोई एक सर्वशक्तिमान, सर्वद्रष्टा, सर्वज्ञ, सर्वनियन्ता पुरुष है- यह विश्वास

जीव को पापादि कार्य से स्वाभाविक रूप से बचाया करता है। किन्तु इस सम्बन्ध में एक विषय पर मैं चिन्तनशील व्यक्तियों की एकाग्रता के लिये प्रार्थना करता हूँ- जो जीव को भगवान कहते हैं अथवा ये कहते हैं कि ये भगवान् होंगे, उनके इन सब वाक्यों का परिणाम देखने में कैसा है? इन सब वाक्यों की व्याख्या हम कैसे भी करें, तब भी उनके द्वारा नीति का मूल आधार भगवद्-विश्वास विनष्ट नहीं होता है क्या? जीव के स्वयं भगवान् होने से, किस के द्वारा वह

नियन्त्रित होगा? समाज के लोगों में भगवत्तत्त्व को जानने के लिये जैसे विश्वान्ति उत्पन्न न हो, इस विषय में गम्भीर भाव से चिन्ता करके ही धर्म-सम्बन्धीय प्रवक्ताओं को जनसमावेश में भाषण देना उचित है, अन्यथा हित के विपरीत होगा।'

उक्त सम्मेलन में योगदान किया था- दक्षिण भारत के श्री शुद्धानन्द भारती, कटक हाईकोर्ट के भूतपूर्व न्यायाधीश और बहरामपुर विश्वविद्यालय के उपाचार्य श्रीबालकृष्ण पात्र, कटक हाईकोर्ट के माननीय न्यायाधीश, श्री रंगनाथ

मिश्र, पण्डित रघुनाथ मिश्र, पद्मश्री, श्री सदाशिव रथशर्मा, अध्यापक, श्री राजकिशोर राय, श्री एम० मल्लिकार्जुन स्वामी स्वामी आत्मानन्द जी और श्री वी० कृष्णमूर्ति। पहले दिन की सभा में श्रोताओं की संख्या उतनी न होने के कारण जितनी उन्हें आशा थी, समिति के सदस्यों ने श्रील गुरुदेव जी को प्रतिदिन प्रातः नगर-संकीर्त्तन-शोभायात्रा निकालने का प्रस्ताव दिया। श्रील गुरुदेव जी ने भी उसका अनुमोदन किया। श्री सदाशिव रथशर्मा नगर-संकीर्त्तन के

पथ निर्देशक हुये। प्रतिदिन के नगर-संकीर्त्तन के बाद तो सभामण्डप में श्रोताओं की संख्या बढ़ती ही चली गयी। पद्मश्री, सदाशिव रथशर्मा जी अनेक स्थानों पर भाषण देने के समय नगरसंकीर्त्तन की महिमा बोलने पर कोरापुट के नगर-संकीर्त्तन की बात उदाहरण-स्वरूप कहते थे।

माननीय श्री रंगनाथ मिश्र एवं उनकी धर्मपत्नी ने साधुओं के भोजन आदि की व्यवस्था के विषय में बहुत तरह से प्रयत्न किया

जिससे वे अशेष धन्यवाद के भागी बने।

श्रील गुरुदेव जी के साथ जो त्रिदण्डियति और ब्रह्मचारी शिष्यगण गये थे, वे हैं- त्रिदण्डि स्वामी श्री मद् भक्ति शरण त्रिविक्रम महाराज, श्रीमद् भक्ति ललित गिरि महाराज, श्रीमद् भक्ति सुहृद दामोदर महाराज, श्रीमद् भक्ति बल्लभ तीर्थ महाराज, श्रीमद् भक्ति विज्ञान भारती महाराज, श्रीमद् भक्ति प्रसाद पुरी महाराज, श्रीमद् भक्ति वैभव अरण्य महाराज, महोपदेशक श्री मंगलनिलय

ब्रह्मचारी, श्रीमदनगोपाल ब्रह्मचारी श्री गोलोकनाथ ब्रह्मचारी श्री परेशानुभव ब्रह्मचारी, श्री अरविन्दलोचन ब्रह्मचारी, श्री भागवतदास ब्रह्मचारी, श्री कृष्णदास ब्रह्मचारी श्री नन्ददुलाल ब्रह्मचारी व श्री रामगोपाल ब्रह्मचारी।

श्रीलगुरुदेव